# हिन्दी साहित्य

# HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL6**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>*Time allowed: Three Hours* | *अधिकतम अंक: 250*<br>*Maximum Marks: 250* |
|---|---|

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): _____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | |

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anil

---

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Word limit in questions, if specified, should be adhered to.*

*Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.*

*Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.*

---

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 150/250 टिप्पणी (Remarks): उत्तम



*Copyright – Drishti The Vision Foundation*

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

## SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास द्वारा रचित 'सतगुरु के अंग' से ली गई है।

व्याख्या ⇒ कबीरदास जी गुरु की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि सतगुरु के वचन उन्हें तीर के समान लग रहे हैं। अर्थात् सतगुरु ने हमें ईश्वर प्राप्ति के लिए ज्ञान प्रदान किया है। सतगुरु के वचनों का ही परिणाम है कि हमारा शरीर ईश्वर से एक हो गया है और मेरे एवं ब्रह्म के बीच अब कोई दूरी विद्यमान नहीं


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है अतः मैंने जीवन का वास्तविक उद्देश्य प्राप्त कर लिया है।

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में गुरु की महत्ता का प्रतिपादन किया है।

(ख) इन पंक्तियों में कबीर का 'भावनात्मक रहस्यवाद' संबंधी दर्शन दृष्टिगोचर होता है।

(ग) तुकांत शब्दों जैसे- तीर, सरीर, इत्यादि से चमत्कार पैदा किया गया है।

(घ) भाषा सधुक्कड़ी है, जिसमें कई क्षेत्रीय भाषाओं के गुण निहित है।

10/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ कृष्ण भक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि सूरदास द्वारा रचित भ्रमरगीतसार से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ गोपियां कृष्ण वियोग का वर्णन करते हुए कहती हैं, कि कृष्ण के वियोग में रात्रि काटना अत्यंत कठिन है। यह रात्रि समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही। यह रात्रि बीत जाए तो कृष्ण की प्राप्ति के लिए प्रयत्न किए जाएं। गोपियां अपने विरह का वर्णन करती हुई कहती हैं कि जब श्री कृष्ण से बिछुड़े हैं, तब से नितर



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंखें से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। अब तो शीतल चांद भी वियोग में सूर्य के समान प्रतीत होने लगा है। सूरदास जी कहते हैं कि अब तो बिना श्रीकृष्ण के इस जगत में सब - कुछ भयानक प्रतीत होने लगा है।

विशेष ⇒ (क) विरह का अद्वितीय वर्णन है। यदि नागमती वियोग को छोड़ दिया जाए, तो हिंदी साहित्य में ऐसा विरह अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है।

(ख) ब्रज भाषा का सौंदर्य अतुलनीय है।

(ग) चंद्रमा का मानवीकरण किया गया है, जो कि इन पंक्तियों को प्रभावशाली बनाता है।

(घ) तुलनात्मक शैली का प्रयोग अद्वितीय है। जैसे — 'सीतल चंद अगिनि सम लागत'।

6/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ 'नागार्जुन' द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' नामक लंबी कविता से ली गई है।

व्याख्या ⇒ नागार्जुन अपने अनुभव को महत्व देते हुए, मिथकीय बातों का खण्डन करते हैं। नागार्जुन कहते हैं कि कवियों ने कुबेर और उसकी अलकापुरी के संबंध में वर्णन किए हैं, वह सब कवि की कल्पना थी। नागार्जुन कहते हैं कि वह कल्पना से अधिक महत्व आँखों देखा को देते हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने हिमालय पर्वत पर मेघों को आपस में टकराते



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देखा है और इसके फलस्वरूप होने वाली गरजना को भी सुना है। अंत में कहते है कि उन्होंने बादल को मेघ बनते देखा है।

विशेष ⇒ (क) जिस प्रकार कबीर ने 'आँखिन देखी' को प्रामाणिक माना था, वैसा ही नागार्जुन ने भी स्पष्ट किया है।

(ख) इन पंक्तियों में 'विराट बिंब' की उपस्थिति है।

(ग) भाषा तत्समी होते हुए भी सहज सरल है।

(घ) वर्तमान में ये पंक्तियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान युग प्रमाणों एवं तर्क-विवेक पर आधारित है।

6/10



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ!...

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ नई कविता आंदोलन से संबंधित कवि अज्ञेय द्वारा रचित असाध्य वीणा से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ प्रियंवद जब वीणा का प्रयत्न करता है, तो वह अपने 'स्व' को वीणा में विलयन कर देता है और उस तरु के समक्ष पहुँचता है, जिससे इस वीणा का निर्माण हुआ है। प्रियंवद कहता है कि उसके सम्मुख मैं अपने आपको लघु रूप में पाता हूँ। प्रियंवद कहता है कि मुझे स्मरण है कि वह विराट वृक्ष मुझे स्तब्ध कर देता है, जब भी वह कुछ कहना


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चाहता है, तो उसकी महानता के सम्मुख मेरे स्वर नहीं निकलते हैं, बल्कि वह मेरे भीतर ही समा जाते हैं और मैं वायु के समान प्रवाहित हो जाता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में अज्ञेय का 'प्रेम बौद्ध दर्शन' दृष्टिगोचर होता है।

(ख) भाषा तत्सम होते हुए भी सरल एवं सहज है।

(ग) छंद को तोड़ा गया है, किंतु आंतरिक लय और तुक इन पंक्तियों को प्रभावी बनाती है।

(घ) वर्तमान में ये पंक्तियाँ लोगों को अपने 'अहं' को त्यागने को प्रेरित करती हैं। जिससे वह समाज के विकास में भूमिका निभा सकें।

6/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
और बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
और मर गया...

संदर्भ ⇒ ~~(क)~~ प्रस्तुत पंक्तियां मुक्तिबोध द्वारा रचित 'ब्रह्मराक्षस' नामक लंबी कविता से ली गई है।

व्याख्या ⇒ मुक्तिबोध मध्यवर्गीय व्यक्ति की स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वह विश्वचेतस और आत्मचेतक अर्थात समाज कल्याण और निजी स्वार्थों के बीच हमेशा संघर्ष करता है। वह हमेशा विश्वचेतस बनने के लिए प्रयास करता रहा है। वह समाज कल्याण हेतु अपने स्वार्थों की पूर्ति तिलांजलि देना चाहता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। और इसके लिए कोई व्यवहारिक कार्य नहीं करता, बल्कि घर में बैठा चिंतन करता है और इसी का परिणाम है कि वह मर गया और उसका कार्य अधूरा रह जाता है।

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में 'फैंटसी शिल्प' का सुंदर प्रयोग किया गया है।

(ख) भाषा के स्तर पर प्रयोग देखने को मिलते हैं। देशज, तद्भव एवं अश्लील शब्दों का भी प्रयोग।

(ग) इन पंक्तियों आंतरिक तुक या लय देखने को मिलती है।

(घ) वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति को ~~क्या~~ समाज कल्याण के लिए प्रेरित करती है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्यवीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय द्वारा रचित लंबी कविता 'असाध्यवीणा' का केंद्रीय स्वर 'सृजन तत्व' ही है। अज्ञेय ने असाध्यवीणा को 'सृजन की अर्हता', 'सृजन का स्वरूप' तथा 'सृजन का प्रभाव' इन तीन तत्वों के आधार पर ही पूरी कविता पूर्ण की है।

'असाध्यवीणा' में वीणा का जब से निर्माण हुआ है, तब से कोई भी कलावंत उसे बजाने में असमर्थ ही रहा है। राजा इस संदर्भ में प्रियंवद से कहता है -

"हार गए मेरे सब जाने माने कलावंत,
सबकी विद्या है गई अकारथ।"

प्रियंवद वीणा बजाने हेतु अर्हता को जानता है। उसका मानना है कि इस वीणा को वही व्यक्ति साध सकता है, जो अपने 'अहं' का वीणा के


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सम्मुख समर्पण कर और अपनी लघुता प्रदर्शित कर सके। प्रियंवद अपने आपको भी कलावंत नहीं मानता बल्कि 'साधक' मानता है। वह कहता है -

"धीरे बोला! राजन
मैं तो कलावन्त हूँ नहीं
प्रिय साधक हूँ"

तत्पश्चात अज्ञेय 'सृजन का स्वरूप निर्धारित करते हैं। अज्ञेय का मानना है कि जब तक व्यक्ति अपने अहं का विलयन नहीं कर देता है, तब तक वीणा की साधना असंभव है। उदाहरण के लिए प्रियंवद कहता है कि-

"श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो स्वयं डूब
गया था शून्य में।"

अज्ञेय आगे कहते हैं कि साधने की प्रक्रिया अकेले होती है। 'प्रियंवद भूल गया


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

या राजसभा' उसकी अकेले की साधना को स्पष्ट करता है। अज्ञेय का मानना है कि वीणा से जो भी ध्वनि निकली वह 'अखण्ड ब्रह्म' की अभिव्यक्ति है, इसमें रचनाकार की कोई भूमिका नहीं है।

इसी प्रकार अज्ञेय 'सृजन तत्व का प्रभाव' स्पष्ट करते हैं। उनका मानना है कि सृजन तत्व के प्रभाव परिणाम है कि राजा में ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध जैसे अवगुण समाप्त हो गए, तो वहीं रानी की आभूषणों की आकांक्षा भी ~~समाप्त~~ हो गई। अज्ञेय यहाँ सृजन का प्रभाव स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि सृजन से उत्पन्न हुई ध्वनि में सभी एक साथ डूब गए, लेकिन उसका प्रभाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान मे प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रत्येक व्यक्ति पर प्रभाव अलग - अलग पड़ा। उनका मानना कि व्यक्ति समाज में एक साथ रहते हुए भी अपने स्वतंत्र अस्तित्व को धारण करता है।
उदाहरण के लिए -
"डूब गए सब एक साथ
अलग - अलग एकाकी पार तीर"

अतः हम कह सकते हैं कि असाध्यवीणा 'सृजन तत्व' की गहन व्याख्या करती है।

12/20
Good


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध मार्क्सवादी रचनाकार हैं, ऐसे में उनकी सभी रचनाओं में समाज परिवर्तन की छटपटाहट दिखाई देती है। मार्क्सवाद का मानना है कि रचनाकार का उद्देश्य समाज में क्रांति चेतना जागृत कर समाज परिवर्तन होना चाहिए। यही स्वर मुक्तिबोध की रचना 'ब्रह्मराक्षस' में दिखाई देता है, जिसमें 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' दिखाई पड़ता है।

मुक्तिबोध 'आत्मचेतस' से 'विश्वचेतस' होना चाहते हैं। उनका मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने निजी स्वार्थों का त्यागकर समाज के कल्याण हेतु कार्य करने चाहिए। यही छटपटाहट हमें पूरी कविता में दिखाई पड़ती है। ब्रह्मराक्षस


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

'विश्वचेतस बेवनाव' के लिए प्रयत्नशील रहता है।

मुक्तिबोध इस प्रक्रिया में वस्तुनिष्ठता चाहते हैं। उनका मानना है कि व्यक्ति के अंदर 'दशमलव' भी निजी स्वार्थ नहीं होने चाहिए। इसी का परिणाम है कि ब्रह्मराक्षस इसके लिए प्रयत्नशील रहता है और असफल रहता है। उदाहरण के लिए -

"एक परित्यक्त सूनी बावड़ी
अंधेरी उसकी सीढ़ियां
एक चढ़ना और उतरना
पुनः चढ़ना और लुढ़कना।"

मुक्तिबोध बताते हैं कि मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी हमेशा इसी का प्रयास करता है कि वह समाज में


कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परिवर्तन लाए और इसके लिए वह जीवन भर संघर्ष करता रहता है . और वह कभी भी पूर्णतः विश्वचेतस नहीं हो पाता , इसी संघर्ष में उसकी मौत भी हो जाती है। उदाहरण के लिए_

"अकेले वह अपना
गणित करता रहा
और मर गया।"

अतः हम कह सकते हैं कि ब्रह्मराक्षस मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष है जो आत्मचेतस और विश्वचेतस रूपी दो 'कठिन पाटो के बीच, पिस जाता है।

9/15


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन की सशक्त रचनाओं में शामिल 'बादल को घिरते देखा है' न केवल कथ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि शिल्प कौशल से भी इसका हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है।

'बादल को घिरते देखा है' के काव्यरूप निर्धारण को विवाद की स्थिति है। कुछ विचारक मानते हैं कि यह एक लंबा गीत, जबकि कुछ इसकी प्रबंधात्मकता के कारण लंबी कविता के तौर पर स्वीकार करते हैं। 'बादल को घिरते देखा है' को वर्तमान में 'एक लंबी कविता' के रूप में मान्यता प्राप्त है।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बादल को घिरते देखा है कि भाषा मुख्यतः तत्समी है। क्योंकि 'हिमालय पर्वत की व्याख्या तत्सम प्रधान शब्दों में अच्छे प्रकार से संभव थी। उदाहरण के लिए -

"अवल - धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है।"

किंतु उनकी रचना में तद्भव एवं देशज शब्द भी आए हैं। जैसे - गरजना, भिड़ना इत्यादि।

आचार्य शुक्ल ने कहा है कि रचना में केवल अर्थग्रहण ही नहीं होना चाहिए, बल्कि 'बिंब ग्रहण' की क्षमता भी होनी चाहिए। 'बादल को घिरते देखा है' में एकल, संश्लिष्ट, दृश्य, सत्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सभी प्रकार के बिंब आए हैं।
उदाहरण के लिए -

"मैंने भीषण जाड़ों में,
महामेघ को झंझानिल से,
गरज - गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।"

इस कविता लय, नादात्मकता और ध्वनियों का सुंदर प्रयोग मिलता है। यहाँ लय बनाने के लिए 'बादल को घिरते देखा है' का ध्रुवता के रूप में प्रयोग किया है। इसमें आनुभाविकता को महत्व देने के कारण व्यंग्य के भी कुछ उदाहरण मिलते हैं। जैसे -
"कहाँ गया वह धनपति कुबेर,
कहाँ गई उसकी वह अलकापुरी।"

अतः हम कह सकते हैं कि नागार्जुन की बादल को घिरते देखा है शिल्प की दृष्टि से अद्वितीय कविता है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 20

नागार्जुन जन प्रतिबद्ध कवि हैं। उनके काव्य में जन साधारण की सहज अभिव्यक्ति, समस्याएँ एवं जनजीवन की अभिव्यक्ति होती है।

नागार्जुन अपने आपको आम जन से जोड़कर देखते हैं। नागार्जुन आम जन की ~~लिए~~ समस्याओं से दुःखी होते हैं। उनको समाधान प्रस्तुत न कर पाने के कारण उनमें छटपटाहट भी दिखती है। जैसे कबीर लिखते हैं, - "दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै"। वैसे ही नागार्जुन भी कहते हैं -

"रोता हूँ लिखता जाता हूँ,
कवि को भावुक पाता हूँ।"



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन किसी भी विचारधारा के प्रति आग्रह नहीं रखते हैं, बल्कि उनका उद्देश्य आम जन की समस्याओं को उठाना है। उनका कहना है –

"क्या है दर्शन, क्या है वाद
जनता को रोटी से काम।"

उन्होंने अपने काव्य में गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, दलितों की उत्पीड़न इत्यादि का वर्णन किया है। गरीबी और भुखमरी के संदर्भ में निम्न उपाहरण द्रष्टव्य है –

"कई दिनों तक चूल्हा रोया,
चक्की रही उदास।
कई दिनों तक कानी कुतिया
भी सोई उनके पास।
× × × × × ×
चमक उठी घर भर की आँखें
कई दिनों के बाद।"



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन आम जन के प्रति प्रतिबद्ध हैं। वह राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, चापलूसी का पर भी व्यंग्य करते हैं। उन्होंने निम्न पंक्तियों में राजनीति पर व्यंग्य किया है -

"आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी,
यही राय हुई है जवाहरलाल की।"

नागार्जुन अपनी रचनाओं में आम जन की भाषा, बिंबों का प्रयोग करते हैं। उनका मानना है कि ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए, जो आम जन से जुड़ी हो। इसलिए उनके काव्य में न तो रीति कवियों जैसे चमत्कार दिखता है और न ही छायावादी ~~आदि~~ कवियों जैसी ~~क~~ वायवीयता।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः हम कह सकते हैं कि नागार्जुन जन प्रतिबद्ध कवि हैं। उन्होंने आम जन के प्रत्येक पक्ष को छुआ है। 'हरिजन गाथा' और 'अकाल और उसके बाद' इनके उदाहरण हैं।

Good 12/20


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप एवं औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस ~~की~~ मुक्तिबोध की महत्वपूर्ण रचना है। इस रचना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान यदि किसी क्षेत्र में माना जाता है, तो वह 'फैंटेसी शिल्प' का प्रयोग।'

मुक्तिबोध मार्क्सवादी रचनाकार है। मार्क्सवाद का मानना है कि रचनाकार को यथार्थ कथ्य के वर्णन के लिए यथार्थ शिल्प का प्रयोग करना चाहिए। किंतु मुक्तिबोध का मानना है कि 'यथार्थ' का वर्णन 'गैर यथार्थ शिल्प' के माध्यम से प्रभावी रूप से किया जा सकता है। इसीलिए उन्होंने फैंटेसी शिल्प का चयन किया है।

फैंटेसी का उपयोग कर व्यक्ति वास्तविक जगत में न हो सकने


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वाले कार्यों को स्वप्न के माध्यम से कर सकता है।

मुक्तिबोध की रचना 'ब्रह्मराक्षस' मनुष्य की अंतर्जगत की रचना है, ऐसे में यदि वह क्रांति चेतना दिखाना चाहें, तो वह वास्तविक जगत में संभव है। किंतु वह फैंटेसी शिल्प के माध्यम से इसको वर्णित कर सकते हैं। मुक्तिबोध व्यक्ति के चेतन और अवचेतन मन के बीच ~~के~~ के संघर्ष को फैंटेसी शिल्प के माध्यम से दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए -

"फिसल गया वह भीतरी औ' बाहरी
दो कठिन पाटों के बीच,
ऐसी ट्रेजडी है नीच।"

फैंटेसी शिल्प के प्रयोग अनावश्य वर्णित करने



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से बचा जा सकता है।
इसमें स्वप्न के माध्यम से किसी भी घटना का वर्णन संभव है। मुक्तिबोध का मानना है कि वह किसी विषयवस्तु का पूर्ण वर्णन करना चाहते हैं, यदि वह फैंटेसी का प्रयोग न करें तो कविता बेहद लंबी हो जाएगी इसीलिए उन्होंने मानव के संघर्ष को दिखाने के लिए फैंटेसी का प्रयोग किया है। ~~इसके~~ इसके अतिरिक्त वह जैसे विषयों का चयन करते हैं। उनमें फैंटेसी का प्रयोग आवश्यक है। उदाहरण के लिए.

"एक चढ़ना औ, उतरना
पुनः चढ़ना औ, लुढ़कना।"

मुक्तिबोध का यह रचनाकौशल ही है कि वह फैंटेसी शिल्प के माध्यम से यथार्थ को और प्रभावी रूप में व्यक्त करने में सक्षम हुए।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ज़ेन बौद्धमत के प्रभाव के संदर्भ में 'असाध्य वीणा' कविता का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय पर ~~ज़ेन~~ 'ज़ेन बौद्धमत' का प्रभाव था। वस्तुतः ज़ेन बौद्धमत, बौद्ध धर्म के महायान से संबंधित एक शाखा है, जो जापान में प्रचलित है। अज्ञेय ने अपने रचनाकर्म के दौरान जापान की यात्रा की, ऐसे में उनकी रचना में ज़ेन बौद्धमत का प्रभाव नज़र आता है।

महायान बौद्ध परंपरा की दो शाखाएं 'माध्यमिक शून्यवाद' और 'विज्ञानवाद'। माध्यमिक शून्यवाद के प्रवर्तक 'नागार्जुन' माने जाते हैं, तो वहीं विज्ञानवाद के प्रवर्तक 'असंग' को माना जाता है।

माध्यमिक शून्यवाद का मानना है कि व्यक्ति की परम ब्रह्म से कोई



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वतंत्र सत्ता नहीं तथा जगत में सभी कुछ शून्य है। अज्ञेय की रचना ~~अ~~ असाध्यवीणा में इसका प्रभाव दिखता है। अज्ञेय ने असाध्यवीणा में 'शून्य' शब्द का कई बार प्रयोग किया है और उनका मानना है कि वीणा से निकली ध्वनि ~~ब~~ 'ब्रह्म के मौन' की अभिव्यक्ति है। उदाहरण के लिए -

'~~[illegible]~~ मैं तो डूब गया था
स्वयं शून्य में।'

असाध्यवीणा पर विज्ञानवाद का प्रभाव अधिक दिखाई पड़ता है। विज्ञानवाद का ~~[illegible]~~ मानना है कि व्यक्ति आराधना कर ब्रह्म की प्राप्ति कर सकता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। वह व्यक्ति को ब्रह्म का अंश ही मानता है। असाध्यवीणा में वीणा से जो ध्वनि निकलती है, वह एक लंबी साधना प्रक्रिया के पश्चात ही निकलती है। अज्ञेय इसके लिए असाध्यवीणा में प्रियंवद से ध्यान आराधना करवाते हैं। उदाहरण के लिए-

"शोध रहा था वीणा
नहीं स्वयं को शोध
रहा था।"

अतः कहा जा सकता है कि असाध्य वीणा में ज़ेन बौद्धमत का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

9/15


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

## SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध उपन्यासकार यशपाल द्वारा रचित 'दिव्या' नामक उपन्यास से ली गई है।

व्याख्या → मारिश कहता है कि जीवन समय के साथ परिवर्तनशील है। समय चलायमान है अतः मनुष्य को भी स्थिर नहीं रहना चाहिए। प्रवाह में सभी व्यक्ति सम्मिलित होते हैं, चाहे वह साधु संन्यासी हों या गृहस्थ। मनुष्य स्थिर नहीं है, इसी का परिणाम कि सृष्टि एवं प्रकृति निरंतर विकास कर रही है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों मनुष्य के जीवन का उद्देश्य सृष्टि करना बताया गया है।

(ख) यशपाल के मार्क्सवादी दृष्टि का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

(ग) सूत्र शैली का प्रयोग किया है - समय प्रवाह है।

(घ) भाषा तत्सम होते हुए भी सरल सहज है।

6/10



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य रामचंद्र शुक्ल के कविता क्या है नामक निबंध से ली गई है।

व्याख्या ⇒ कविता का उद्देश्य मनुष्य के हृदय के का विकास है। वह मनुष्य के हृदय का निरंतर विकास करते हुए मनुष्य को समस्त मानवीय गुणों से युक्त करती है और मनुष्य मनुष्यता की उच्च भूमि को प्राप्त करता है। तब मनुष्य भावयोग की उच्च कक्षा में पहुँचता है, से उसका जगत के साथ पूर्ण समन्वय हो जाता है और ~~उसी~~ उसकी स्वतंत्र सत्ता नहीं रहती, अर्थात- उसका हृदय समस्त विश्व के प्रति संवेदनशील हो जाता



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है।

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में साहित्य का प्रयोजन स्पष्ट किया गया है।

(ख) भाषा तत्सम होते हुए भी सहज है।

(ग) विचारों की 'गूढ़ गुम्फित परंपरा' दिखाई पड़ती है।

(घ). एक - एक शब्द ~~मितव्ययिता~~ आवश्यकतानुसार आया है।

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित श्रद्धा-भक्ति नामक निबंध से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ शुक्ल जी कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करने चाहिए। उनका कहना है कि कर्म भी उत्कृष्टतापूर्ण, जिससे समाज में अन्य व्यक्ति प्रेरणा ले सकें। इससे समाज के अन्य व्यक्ति भी ऐसे कर्म करने को तत्पर होंगे। यदि इस प्रकार संसार के सभी व्यक्ति सद्गुणों से पूर्ण कार्य करते रहे तो यह संसार स्वर्ग के रूप



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में व्यापित हो जाएगा।

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में व्यक्ति को उत्कृष्ट कर्मों की महत्ता का वर्णन किया गया है।

(ख) सूत्र शैली का सुंदर प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए - कर्ता से बढ़कर कर्म का दृश्य स्मारक नहीं।

(ग) भाषा तत्सम होते हुए भी सरल, सहज है।

(घ) विचारों की 'गूढ़ गुम्फित पटपेटा' का निर्वाह किया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय–भारत–किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गई हैं।

व्याख्या → बौद्ध धर्म का अनुयायी धातुसेन भारत की प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए कहता है कि भारत संपूर्ण विश्व में श्रेष्ठ है। संपूर्ण विश्व एवं पृथ्वी का प्रत्येक कण कण इससे प्रेम करता है। भारत से ही अनादिकाल में ज्ञान की ज्योति उत्पन्न हुई, जो वर्तमान में विश्व में उज्ज्वलित है। अतः पृथ्वी के प्रत्येक मनुष्य को भारत से प्रेम है, कोई मूर्ख ही होगा, जिसे



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भारत से प्रेम न हो।

विशेष ⇒ (क) प्रस्तुत पंक्तियां नवजागरण चेतना को प्रदर्शित करती है।

(ख) भारत के अतीत का रोमांचपूर्ण वर्णन किया गया है।

(ग) भाषा सरल, सहज एवं प्रवाहपूर्ण है।

(घ) वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति को देश के प्रति प्रेम एवं समर्पण को बढ़ावा देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) सामन्ती बन्धनों के खत्म होने पर सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ अपने सहज रूप मे पल्लवित होंगी और नारी कवियों की नायिका मात्र न रह जाएगी। वह श्रम करने वाली, समान अधिकार वाली नागरिक भी होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियां रामविलास शर्मा द्वारा रचित 'तुलसी काव्य में सामंत विरोधी मूल्य' नामक निबंध से ली गई है।

व्याख्या ⇒ शर्मा जी कहते हैं कि जब समाज से सामंती बंधन समाप्त हो जाएंगे, तो कोई स्त्री किसी पुरुष वाध्यतापूर्वक स्वीकार नहीं करेगा, बल्कि ऐसी प्रेम, सौंदर्य और भावनाओं के आधार पर संबंधों का निर्माण होगा। नारी की स्थिति स्त्री में सुधार होगा और वह किसी कवि की नायिका नहीं रहेगी, बल्कि उसे समाज में समान अधिकार



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्राप्त होंगें और वह पुरुषों के समान आर्थिक गतिविधियों में संलग्न होंगी।

विशेष → (क) नारी स्वतंत्रता की वकालत की गई है।

(ख) प्रेम, सौंदर्य जैसे तत्वों को महत्व दिया गया है।

(ग) मार्क्सवाद का प्रभाव नजर आता है।

(घ) भाषा सरल एवं सहज है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'क्या आपको लगता है कि एक मार्क्सवादी आलोचक एवं निबंधकार होते हुए भी रामविलास शर्मा तुलसी-साहित्य का मूल्य-निर्धारण करते हुए सामान्य मार्क्सवादी अवधारणा का अतिक्रमण करते हैं।' पाठ्यक्रम में निर्धारित निबंध के आधार पर अपना मत प्रकट कीजिए। 20

रामविलास शर्मा मार्क्सवादी आलोचक और निबंधकार हैं। मार्क्सवाद का मानना है कि रचनाकार का मुख्य उद्देश्य समाज में तनाव पैदा करना है और वे कथ्य और रूप में से कथ्य को अधिक महत्ता प्रदान करते हैं।

रामविलास शर्मा तुलसीदास के साहित्य का मूल्यांकन करते हुए उनके काव्य में निहित 'सामंत विरोधी मूल्यों' का वर्णन करते हैं। इसके लिए उन्होंने 'तुलसी के ~~साहित्य~~ काव्य में ~~निहित~~ में सामंत विरोधी मूल्य' नामक निबंध की रचना की।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शर्मा जी ने तुलसी के अंधभक्तों एवं उनके अंध ~~आ~~ आलोचकों के मतों का खण्डन किया है। शर्मा जी का मानना है कि तुलसी पर नारी ~~वि~~ विरोधी होने का आरोप लगाता है। उन्होंने लिखा है - 'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी।"

किंतु यहाँ से ही तुलसी का नारी दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं होता है। एक ओर यह कथन समुद्र द्वारा कहा गया है, तो साथ ही तुलसी ने ही नारी पराधीनता पर प्रश्नचिन्ह उत्पन्न किए हैं:-
"कौन विधि सृजि जग नारी पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं।"

तुलसी मध्यकाल ~~के~~ पतिव्रत के प्रति



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लोगों का आह्वाहन कर रहे हैं। इसी प्रकार उन्होंने जाति प्रथा का विरोध किया है। इन्होंने लिखा है-
" धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूत कहौ, जुलाहा कहौ कोऊ, मांगि कै खइबो, मसीत को सोइबो।"

तुलसी ने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रसंगों का भी वर्णन मिलता है। उन्होंने अकाल, बेरोजगारी तथा गरीबी का तो वर्णन किया ही है। साथ ही उन्होंने उस शासक पर भी प्रश्न चिन्ह खड़े किए हैं, ~~कि~~ जो जन कल्याण के लिए तत्पर नहीं है। उदाहरण के लिए-
" जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवश्य नरक अधिकारी।"


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अतः तुलसीदास ने मध्यकाल में निहित सामंती मानसिकता पर कुठाराघात किया है।

रामविलास शर्मा तुलसी साहित्य का मूल्य निर्धारण करते हुए कहीं मार्क्सवाद का अतिक्रमण करते हैं, तो कहीं मार्क्सवाद प्रतिपादन। जब वे तुलसी के काव्य में आर्थिक वर्णनों को महत्व देते हैं, तो वह मार्क्सवाद के अनुकूल नजर आता है, तो वहीं जब वह श्रद्धा, एवं देवत्व जैसे तत्वों को महत्व देते हैं, तो वहाँ वह मार्क्सवाद का अतिक्रमण करते हैं।

12/20


कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों को वस्तुनिष्ठ मानते हैं या व्यक्तिनिष्ठ? अपना मत प्रकट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'विचार प्रधान' निबंधों को अधिक महत्व दिया है। आचार्य शुक्ल के निबंधों को 'निबंधों की कसौटी' के रूप में स्वीकार किया जाता है। शुक्ल जी के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति', 'कविता क्या है', इत्यादि को लेकर साहित्यकारों में विवाद है कि शुक्ल जी के निबंध वस्तुनिष्ठ हैं या आत्मनिष्ठ हैं।

शुक्ल जी के निबंधों में वस्तुनिष्ठता के गुण देखने को मिलते हैं। उन्होंने अपने निबंधों में 'वैज्ञानिक शैली' को प्राथमिकता दी, जो कि वस्तुनिष्ठता को ही प्रदर्शित करती है। शुक्ल जी वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर परिभाषा देते हैं।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण के लिए-
"प्रेम और श्रद्धा के योग का नाम भक्ति है।"

शुक्ल के निबंधों में चिंतन देखने को मिलता है, वह अनावश्यक शब्दों के चयन से बचते हैं। वह प्रत्येक विषय का चिंतन करते हुए विश्लेषण करते हैं। उदाहरण के लिए-
"प्रेम ~~बैयबि~~ में निजता अधिक होती है जबकि श्रद्धा में व्यापकता।"

शुक्ल जी के निबंधों की शैली में वस्तुनिष्ठ है। उन्होंने अपने निबंधों में सूत्र शैली का बड़ी मात्रा में प्रयोग किया है।

किंतु शुक्ल जी के निबंधों में वस्तुनिष्ठता भी है। उनके निबंधों में हास्य, व्यंग्य संबंधी अनेक वर्णन मिलते हैं।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण के लिए -
"बंदर को बंदरिया के मुंह में प्रेम दिखता है, जबकि मानव पेड़ पौधों, पशु - पक्षियों में सौंदर्य ढूंढ लेता है।"

शुक्ल जी मानते है कि प्रत्येक रचना में व्यक्तिनिष्ठता बनी ही रहती है। उनकी 'लोकमंगल' की धारणा 'रसानुभूति' इत्यादि ~~उनके~~ में भी उनकी व्यक्तिनिष्ठता दिखाई देती है।

अतः हम कह सकते हैं कि शुक्ल जी के निबंधों में वस्तुनिष्ठता एवं व्यक्तिनिष्ठता दोनों मिलती है। हाँ यह अवश्य है कि चिंतन प्रधान निबंध होने के कारण इनमें वस्तुनिष्ठता अधिक दिखाई पड़ती है। शुक्ल जी कहते हैं कि "रचना यात्रा के दौरान मैं बुद्धि लेकर चला, जहाँ - जहाँ बुद्धि थकती गई, वहाँ - वहाँ हृदय रमता गया।"

9/15


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के आधार पर उनकी साहित्य-संबंधी मान्यताओं को प्रस्तुत कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद ने 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' को प्रगतिबादी सम्मेलन लखनऊ के लिए एक भाषण के तौर पर तैयार किया था। इसमें उनकी साहित्य संबंधी मान्यताएं स्पष्ट होती हैं।

प्रेमचंद का मानना है कि रचनाकार स्वाभावत: प्रगतिशील होता है। उनका मानना है कि रचनाकार का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं होना चाहिए, बलिक उसके साहित्य में सामाजिक परिवर्तन से संबंधित उद्देश्य निहित होना चाहिए।

प्रेमचंद ने रीतिकालीन मानसिकता की आलोचना की है। उनका मानना था इन कवियों ने केवल अपने स्वार्थ एवं धन प्राप्ति के लिए रचना की। उनका मानना है कि जिन्हें धन कमाना


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है, उनका साहित्य के क्षेत्र में कोई नहीं है।

प्रेमचंद अभिजात्यवर्गीय चरित्रों के सौंदर्य को उचित नहीं मानते हैं। उनका मानना है कि साहित्यकार को समाज के सभी वर्गों में सौंदर्य की खोज करनी चाहिए। उन्हें अभिजात्य चरित्रों के सौंदर्य का वर्णन करने वाले साहित्यकारों पर व्यंग्य करते हुए लिखा कि "इन्हें रंगों से रंगे होंठों, कपोलों में ही सुंदरता नजर आती है।"

प्रेमचंद मानते हैं कि रचनाकार कौशल जन्मजात होता है, किंतु रचनाकार निरंतर अभ्यास का इसे परिमार्जित करते रहना चाहिए।

प्रेमचंद का मानना कि रचनाकारों में वायवीय



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

आधार पर रचना नहीं करनी चाहिए, बल्कि पहले उसे अपने क्षेत्र का चयन करना चाहिए, तत्पश्चात उसी के अनुसार रचना करनी चाहिए।

प्रेमचंद सहज, सरल भाषा को महत्व प्रदान करते हैं। उन्होंने अत्यधिक अलंकारों का प्रयोग एवं अप्रस्तुत कथनों के प्रयोग का खण्डन किया है।

प्रेमचंद द्वारा दी गई साहित्य संबंधी मान्यताएँ वर्तमान में भी साहित्यकारों को रोशनी प्रदान कर रही हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation